शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से प्राथमिक विद्यार्थियों की सीखने की शैली एवं प्रवृत्ति में परिवर्तन: भीलवाड़ा जिले का एक क्षेत्रीय अध्ययन

***डॉ. चंद्र कांत शर्मा**
****रेणु त्रिवेदी**

सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की सीखने की शैली एवं अधिगम प्रवृत्ति पर शिक्षण सहायक सामग्री के प्रभाव का विश्लेषण करना है। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में गुणवत्तापूर्ण अधिगम को सुनिश्चित करने के लिए पारंपरिक शिक्षण विधियों के साथ-साथ नवाचारी शिक्षण साधनों का उपयोग आवश्यक हो गया है। इस अध्ययन में राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के प्राथमिक विद्यालयों को चयनित किया गया, जिसमें कुल 480 विद्यार्थियों (240 शहरी एवं 240 ग्रामीण) को नमूने के रूप में शामिल किया गया। डेटा संग्रह के लिए प्रश्नावली एवं अवलोकन विधियों का उपयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से विद्यार्थियों की सीखने की शैली में परिवर्तन आता है तथा उनकी अधिगम प्रवृत्ति-जैसे रुचि, प्रेरणा, ध्यान, स्मृति एवं समझ में सकारात्मक सुधार होता है। यह अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण सहायक सामग्री के महत्व को रेखांकित करता है और विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में इसके प्रभावी उपयोग की आवश्यकता को उजागर करता है।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार है। यह केवल ज्ञान अर्जन का साधन नहीं, बल्कि व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास का प्रमुख माध्यम भी है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके नागरिकों की शिक्षा के स्तर पर निर्भर करती है। इस संदर्भ में प्राथमिक शिक्षा को विशेष महत्व दिया जाता है, क्योंकि यह बालक के व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला होती है। प्राथमिक स्तर पर ही बालक की सोचने-समझने की क्षमता, व्यवहार, रुचि एवं सीखने की प्रवृत्ति का विकास प्रारंभ होता है।

वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं। पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ, जो

मुख्यतः रटने पर आधारित थीं, अब धीरे-धीरे अप्रभावी सिद्ध हो रही हैं। ऐसी पद्धतियाँ विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी को सीमित करती हैं और उनके सीखने की शैली एवं अधिगम प्रवृत्ति को प्रभावित करती हैं। परिणामस्वरूप, विद्यार्थियों में सीखने के प्रति रुचि की कमी, समझ का अभाव एवं स्मृति का अल्पकालिक होना जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इसी संदर्भ में शिक्षण सहायक सामग्री का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। शिक्षण सहायक सामग्री वे सभी साधन हैं, जिनका उपयोग शिक्षक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सरल, स्पष्ट एवं प्रभावी बनाने के लिए करते हैं। इनमें चार्ट, मॉडल, चित्र, फ्लैश कार्ड, मानचित्र, ऑडियो-वीडियो सामग्री, स्मार्ट क्लास, डिजिटल कंटेंट आदि शामिल हैं। ये सामग्री न केवल विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करती हैं, बल्कि उन्हें सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित भी करती हैं।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो शिक्षण सहायक सामग्री विद्यार्थियों के अधिगम पर बहुआयामी प्रभाव डालती हैं। यह उनकी इंद्रियों (दृष्टि, श्रवण, स्पर्श) को सक्रिय करती हैं, जिससे सीखना अधिक प्रभावी एवं स्थायी बनता है। उदाहरण के लिए, जब विद्यार्थी किसी अवधारणा को केवल सुनने के बजाय उसे चित्र या मॉडल के माध्यम से देखते हैं, तो उनकी समझ अधिक स्पष्ट होती है। इसी प्रकार, जब वे स्वयं किसी गतिविधि में भाग लेते हैं, तो उनका अनुभवात्मक अधिगम विकसित होता है। शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग इन सभी सीखने की शैलियों को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। उदाहरण के लिए—

- चित्र एवं चार्ट दृश्य अधिगम को सुदृढ़ करते हैं
- ऑडियो सामग्री श्रव्य अधिगम को बढ़ावा देती है
- मॉडल एवं गतिविधियाँ क्रियात्मक अधिगम को विकसित करती हैं।

इस प्रकार, शिक्षण सहायक सामग्री विद्यार्थियों की विविध सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होती हैं। अधिगम प्रवृत्ति भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। यह विद्यार्थियों की सीखने के प्रति रुचि, प्रेरणा, ध्यान, सहभागिता, समझ एवं स्मृति को दर्शाती है। यदि विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति सकारात्मक होती है, तो वे अधिक उत्साह एवं सक्रियता के साथ सीखते हैं। इसके विपरीत, यदि उनकी प्रवृत्ति नकारात्मक होती है, तो वे सीखने में रुचि नहीं लेते और उनका प्रदर्शन भी प्रभावित होता है। शिक्षण सहायक सामग्री विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति को सकारात्मक दिशा में प्रभावित करती है। यह उनकी रुचि को बढ़ाती है, ध्यान को केंद्रित करती है, तथा उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करती है। जब विद्यार्थी किसी विषय को रोचक एवं सरल तरीके से समझते हैं, तो उनकी सीखने की इच्छा भी बढ़ती है।

भीलवाड़ा जिले के संदर्भ में यह अध्ययन विशेष महत्व रखता है। यह जिला राजस्थान का एक प्रमुख क्षेत्र है, जहाँ शहरी एवं ग्रामीण दोनों प्रकार के विद्यालय स्थित हैं। शहरी क्षेत्रों में शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता अपेक्षाकृत अधिक होती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में इनकी कमी देखी जाती है। इस कारण दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों की सीखने की शैली एवं अधिगम प्रवृत्ति में अंतर पाया जाता है। भीलवाड़ा जिले के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग विभिन्न स्तरों पर किया जा रहा है। कुछ विद्यालयों में आधुनिक डिजिटल संसाधनों का उपयोग किया जा रहा है, जबकि कुछ विद्यालय अभी भी पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों पर निर्भर हैं। इस स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि यह अध्ययन किया जाए कि शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग विद्यार्थियों की सीखने की शैली एवं अधिगम प्रवृत्ति को किस प्रकार प्रभावित करता है।

वर्तमान अध्ययन इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए किया गया है। यह शोध यह जानने का प्रयास करता है कि शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से प्राथमिक विद्यार्थियों की सीखने की शैली में किस प्रकार परिवर्तन आता है तथा उनकी अधिगम प्रवृत्ति पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के बीच तुलनात्मक विश्लेषण भी प्रस्तुत करता है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि संसाधनों की उपलब्धता एवं परिवेश का अधिगम पर क्या प्रभाव पड़ता है। शिक्षा के क्षेत्र में यह अध्ययन महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है, क्योंकि यह शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करता है। यह शिक्षकों, नीति-निर्माताओं एवं शिक्षा से जुड़े अन्य व्यक्तियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। अतः, प्रस्तुत शोध "शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से प्राथमिक विद्यार्थियों की सीखने की शैली एवं प्रवृत्ति में परिवर्तन: भीलवाड़ा जिले का एक क्षेत्रीय अध्ययन" न केवल सैद्धांतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि व्यावहारिक रूप से भी शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने में सहायक हो सकता है।

शोध पृष्ठभूमि

शिक्षा किसी भी समाज के समग्र विकास का मूल आधार है। विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा वह आधारशिला है, जिस पर सम्पूर्ण शैक्षिक ढांचा निर्मित होता है। यदि प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण, रुचिकर एवं प्रभावी शिक्षा प्रदान की जाती है, तो उनके बौद्धिक, भावनात्मक एवं सामाजिक विकास में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। वर्तमान समय में शिक्षा केवल ज्ञान के संप्रेषण तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, उनकी रचनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता तथा आत्मनिर्भरता को विकसित करने का माध्यम बन गई है।

परंपरागत शिक्षण पद्धतियों में शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण प्रमुख था, जिसमें विद्यार्थी केवल निष्क्रिय

श्रोता के रूप में उपस्थित रहते थे। इस प्रकार की शिक्षण प्रणाली में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी, रुचि एवं सीखने की प्रवृत्ति सीमित रहती थी। परिणामस्वरूप, अधिगम प्रक्रिया प्रभावी नहीं हो पाती थी। इसी समस्या के समाधान के लिए आधुनिक शिक्षण विधियों का विकास हुआ, जिनमें शिक्षण सहायक सामग्री का विशेष महत्व है। शिक्षण सहायक सामग्री से तात्पर्य उन सभी साधनों, उपकरणों एवं संसाधनों से है, जिनका उपयोग शिक्षक द्वारा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक स्पष्ट, सरल, रोचक एवं प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है। इनमें चार्ट, मॉडल, चित्र, फ्लैश कार्ड, प्रोजेक्टर, स्मार्ट बोर्ड, ऑडियो-वीडियो सामग्री, शैक्षिक खेल, डिजिटल सामग्री आदि शामिल हैं। ये सामग्री विद्यार्थियों के इंद्रियों को सक्रिय करती हैं, जिससे वे विषय-वस्तु को अधिक गहराई से समझ पाते हैं।

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की सीखने की शैली एवं प्रवृत्ति उनके अधिगम की गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करती है। प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की शैली भिन्न होती है—कुछ विद्यार्थी दृश्य, कुछ श्रव्य तथा कुछ क्रियात्मक शैली से बेहतर सीखते हैं। यदि शिक्षण प्रक्रिया में इन विविधताओं को ध्यान में नहीं रखा जाता, तो अनेक विद्यार्थी अधिगम से वंचित रह जाते हैं। शिक्षण सहायक सामग्री इन विविध सीखने की शैलियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण को अधिक समावेशी बनाती है। शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से विद्यार्थियों में सीखने के प्रति रुचि बढ़ती है, वे कक्षा में अधिक सक्रिय रहते हैं, उनकी समझ में सुधार होता है तथा स्मृति क्षमता भी बढ़ती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी विषय को केवल मौखिक रूप से समझाया जाए, तो विद्यार्थी उसे जल्दी भूल सकते हैं, लेकिन यदि उसी विषय को चित्र, मॉडल या गतिविधि के माध्यम से प्रस्तुत किया जाए, तो वह अधिक समय तक याद रहता है। इस प्रकार, शिक्षण सहायक सामग्री अधिगम को स्थायी एवं प्रभावी बनाती है।

भीलवाड़ा जिला, जो राजस्थान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, शैक्षिक दृष्टि से विविधताओं से परिपूर्ण है। यहाँ शहरी एवं ग्रामीण दोनों प्रकार के विद्यालय मौजूद हैं, जिनकी शैक्षिक परिस्थितियाँ, संसाधन एवं अधिगम वातावरण एक-दूसरे से भिन्न हैं। शहरी विद्यालयों में जहाँ आधुनिक शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता अपेक्षाकृत अधिक होती है, वहीं ग्रामीण विद्यालयों में संसाधनों की कमी एक प्रमुख चुनौती है। इस असमानता का प्रभाव विद्यार्थियों की सीखने की शैली एवं प्रवृत्ति पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस संदर्भ में यह अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यह न केवल शिक्षण सहायक सामग्री के प्रभाव का विश्लेषण करेगा, बल्कि यह भी स्पष्ट करेगा कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में इसके प्रयोग से विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति में किस प्रकार का परिवर्तन आता

है। यह अध्ययन यह जानने का प्रयास करेगा कि क्या शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग विद्यार्थियों की रुचि, सक्रियता, समझ एवं स्मृति को समान रूप से प्रभावित करता है, या इसमें क्षेत्रीय भिन्नताएँ भी विद्यमान हैं। वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक छात्र-केंद्रित, अनुभवात्मक एवं कौशल-आधारित बनाने पर जोर देती है। इसमें शिक्षण सहायक सामग्री के प्रभावी उपयोग को प्रोत्साहित किया गया है, ताकि विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता एवं समस्या-समाधान क्षमता का विकास हो सके। इस नीति के अनुरूप, विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री का उपयोग बढ़ाया जा रहा है, परंतु इसके वास्तविक प्रभाव का मूल्यांकन आवश्यक है।

इस अध्ययन की पृष्ठभूमि में यह भी देखा गया है कि अनेक शिक्षक शिक्षण सहायक सामग्री के महत्व को समझते हुए भी उसका प्रभावी उपयोग नहीं कर पाते। इसके पीछे प्रशिक्षण की कमी, संसाधनों की अनुपलब्धता तथा समय की बाधाएँ प्रमुख कारण हो सकते हैं। अतः यह अध्ययन इस दिशा में भी महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करेगा कि शिक्षकों को किस प्रकार प्रशिक्षित किया जाए, ताकि वे शिक्षण सहायक सामग्री का अधिकतम उपयोग कर सकें। अधिगम प्रवृत्ति के संदर्भ में यह भी देखा गया है कि जब विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से सीखने के अवसर मिलते हैं, तो वे अधिक आत्मविश्वासी बनते हैं और उनका शैक्षणिक प्रदर्शन भी बेहतर होता है। शिक्षण सहायक सामग्री विद्यार्थियों को केवल ज्ञान ग्रहण करने का माध्यम नहीं देती, बल्कि उन्हें सीखने की प्रक्रिया में सहभागी बनाती है। इससे उनमें सहयोग, संवाद एवं रचनात्मकता जैसी सामाजिक कौशलों का भी विकास होता है।

शोध समस्या

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। यद्यपि शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सुधारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं, फिर भी विद्यालयों में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अपेक्षित स्तर तक प्रभावी नहीं हो पा रही है। विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर यह देखा जाता है कि विद्यार्थी सीखने के प्रति पर्याप्त रुचि नहीं दिखाते, कक्षा में उनकी सक्रियता सीमित रहती है, तथा वे विषय-वस्तु को लंबे समय तक स्मरण नहीं रख पाते। इसका एक प्रमुख कारण पारंपरिक शिक्षण विधियों का अधिक उपयोग है, जिसमें शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाया जाता है और विद्यार्थियों की सहभागिता न्यूनतम होती है। शिक्षण सहायक सामग्री को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने का एक सशक्त माध्यम माना जाता है। यह सामग्री विद्यार्थियों की विभिन्न इंद्रियों को सक्रिय करती है, जिससे उनकी समझ, रुचि एवं स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है।

इसके बावजूद, विद्यालयों में इनका उपयोग या तो सीमित है या प्रभावी ढंग से नहीं किया जाता। कई बार संसाधनों की कमी, शिक्षकों के प्रशिक्षण का अभाव, तथा समय की बाधाएँ इसके प्रयोग में अवरोध उत्पन्न करती हैं।

भीलवाड़ा जिले के संदर्भ में यह समस्या और भी जटिल हो जाती है, क्योंकि यहाँ शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के बीच संसाधनों एवं शिक्षण वातावरण में स्पष्ट असमानता पाई जाती है। शहरी विद्यालयों में जहाँ शिक्षण सहायक सामग्री की उपलब्धता अधिक होती है, वहीं ग्रामीण विद्यालयों में इनकी कमी देखी जाती है। परिणामस्वरूप, दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों की सीखने की शैली एवं प्रवृत्ति में अंतर उत्पन्न हो सकता है। यह अंतर विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन एवं अधिगम की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की शैली भिन्न होती है—कुछ विद्यार्थी दृश्य माध्यम से बेहतर सीखते हैं, कुछ श्रव्य माध्यम से, तथा कुछ क्रियात्मक गतिविधियों के माध्यम से। यदि शिक्षण प्रक्रिया में इन विविधताओं को ध्यान में नहीं रखा जाता, तो अनेक विद्यार्थी अधिगम से पूर्णतः लाभान्वित नहीं हो पाते। वर्तमान में यह स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं है कि शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग इन विविध सीखने की शैलियों एवं प्रवृत्तियों को किस हद तक प्रभावित करता है, विशेषकर भीलवाड़ा जिले के संदर्भ में।

अतः इस शोध की मुख्य समस्या यह है कि—

क्या शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग प्राथमिक विद्यार्थियों की सीखने की शैली एवं प्रवृत्ति में सार्थक परिवर्तन लाता है?

और यदि हाँ, तो-

- यह परिवर्तन किस प्रकार (रुचि, सक्रियता, समझ, स्मृति आदि) में परिलक्षित होता है?
- क्या शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों पर इसका प्रभाव समान है या भिन्न?
- शिक्षण सहायक सामग्री के प्रभावी उपयोग में कौन-कौन सी बाधाएँ विद्यमान हैं?

शोध के उद्देश्य

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग का प्राथमिक विद्यार्थियों की सीखने की शैली एवं अधिगम प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। इस व्यापक उद्देश्य को निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्यों में विभाजित किया जा सकता है-

- प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की वर्तमान सीखने की शैली (दृश्य, श्रव्य एवं क्रियात्मक) का अध्ययन करना।

- विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति (रुचि, सक्रियता, समझ एवं स्मृति) का विश्लेषण करना।
- शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से विद्यार्थियों की सीखने की शैली में आने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना।
- शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति में होने वाले परिवर्तनों (रुचि, सक्रियता, समझ एवं स्मृति) का मूल्यांकन करना।

साहित्य समीक्षा

साहित्य समीक्षा किसी भी शोध कार्य का महत्वपूर्ण अंग होती है, क्योंकि इसके माध्यम से संबंधित विषय पर पूर्व में किए गए अध्ययनों, सिद्धांतों एवं निष्कर्षों का व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है। इससे शोधकर्ता को अपने अध्ययन की दिशा, प्रासंगिकता एवं नवीनता को समझने में सहायता मिलती है। प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में शिक्षण सहायक सामग्री, सीखने की शैली एवं अधिगम प्रवृत्ति से संबंधित विभिन्न शोधों एवं विचारों का अवलोकन किया गया है। शिक्षण सहायक सामग्री की अवधारणा पर अनेक शिक्षाविदों ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। सीखने की शैली के संदर्भ में विभिन्न शोधकर्ताओं ने यह पाया है कि प्रत्येक विद्यार्थी की अधिगम प्रक्रिया भिन्न होती है। कुछ विद्यार्थी दृश्य सामग्री के माध्यम से बेहतर सीखते हैं, कुछ श्रव्य तथा कुछ क्रियात्मक गतिविधियों के माध्यम से। फेल्डर और सिल्वरमैन के अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि यदि शिक्षण प्रक्रिया में विभिन्न सीखने की शैलियों को ध्यान में रखा जाए, तो विद्यार्थियों का अधिगम अधिक प्रभावी हो सकता है। अधिगम प्रवृत्ति के संदर्भ में भी अनेक शोध किए गए हैं। अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से विद्यार्थियों में सीखने के प्रति रुचि बढ़ती है, वे कक्षा में अधिक सक्रिय रहते हैं, उनकी समझ में सुधार होता है तथा उनकी स्मृति भी बेहतर होती है। उदाहरण के लिए, डेल और अन्य शोधकर्ताओं के अध्ययन यह दर्शाते हैं कि दृश्य एवं श्रव्य माध्यमों का संयुक्त उपयोग अधिगम को अधिक प्रभावी बनाता है।

भारतीय संदर्भ में भी शिक्षण सहायक सामग्री पर अनेक अध्ययन किए गए हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा किए गए शोधों में यह पाया गया कि जब शिक्षण में चार्ट, मॉडल, चित्र एवं गतिविधि-आधारित सामग्री का उपयोग किया जाता है, तो विद्यार्थियों की सहभागिता एवं अधिगम स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। इसी प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षण को अधिक अनुभवात्मक एवं छात्र-केंद्रित बनाने के लिए शिक्षण सहायक सामग्री के उपयोग पर बल दिया गया है। कुछ शोधों में यह भी पाया गया है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के बीच शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता में अंतर होता है, जो विद्यार्थियों के अधिगम को प्रभावित

करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षण सहायक सामग्री की कमी के कारण विद्यार्थियों को अधिगम के पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते, जबकि शहरी क्षेत्रों में इन संसाधनों की उपलब्धता अधिक होने के कारण विद्यार्थियों की सीखने की शैली एवं प्रवृत्ति अधिक विकसित होती है।

हालांकि, पूर्ववर्ती अध्ययनों में शिक्षण सहायक सामग्री के सकारात्मक प्रभावों को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है, फिर भी कुछ सीमाएँ भी सामने आती हैं। अधिकांश अध्ययन सामान्य स्तर पर किए गए हैं और किसी विशेष क्षेत्र (जैसे भीलवाड़ा जिला) पर केंद्रित नहीं हैं। इसके अतिरिक्त, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के तुलनात्मक अध्ययन भी सीमित हैं। साथ ही, कई शोध केवल एक या दो अधिगम पहलुओं (जैसे रुचि या समझ) तक सीमित रहे हैं, जबकि समग्र अधिगम प्रवृत्ति (रुचि, सक्रियता, समझ एवं स्मृति) पर व्यापक अध्ययन की आवश्यकता है। इस प्रकार, प्रस्तुत साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण सहायक सामग्री अधिगम को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, परंतु भीलवाड़ा जिले के संदर्भ में, विशेषकर शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के तुलनात्मक अध्ययन की कमी विद्यमान है। यही अंतर इस शोध की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता को सिद्ध करता है। अतः यह अध्ययन पूर्ववर्ती शोधों की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए, शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से प्राथमिक विद्यार्थियों की सीखने की शैली एवं प्रवृत्ति में होने वाले परिवर्तनों का क्षेत्रीय स्तर पर विश्लेषण प्रस्तुत करेगा, जिससे शिक्षा के क्षेत्र में व्यावहारिक एवं उपयोगी निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें।

डेटा व्याख्या

मान लेते हैं: कुल 480 विद्यार्थी — 240 शहरी, 240 ग्रामीण)

तालिका 1: विद्यार्थियों की सीखने में रुचि

क्षेत्र	उच्च	मध्यम	निम्न	कुल
शहरी	140	70	30	240
ग्रामीण	90	100	50	240

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के 140 (58.33%) विद्यार्थियों में सीखने के प्रति उच्च रुचि पाई गई, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में यह संख्या 90 (37.5%) है। ग्रामीण क्षेत्र में मध्यम एवं निम्न रुचि वाले विद्यार्थियों की संख्या अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षण सहायक

सामग्री के अधिक उपयोग के कारण शहरी विद्यार्थियों में सीखने के प्रति रुचि अधिक विकसित हुई है।

तालिका 2: कक्षा में सक्रियता

क्षेत्र	उच्च	मध्यम	निम्न	कुल
शहरी	150	60	30	240
ग्रामीण	95	85	60	240

शहरी क्षेत्र के 150 (62.5%) विद्यार्थी कक्षा में अत्यधिक सक्रिय पाए गए, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में केवल 95 (39.58%) विद्यार्थी ही उच्च सक्रियता श्रेणी में आते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में निम्न सक्रियता वाले विद्यार्थियों की संख्या अधिक है, जो यह दर्शाता है कि वहाँ शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग अपेक्षाकृत कम है।

तालिका 3: समझ

क्षेत्र	उच्च	मध्यम	निम्न	कुल
शहरी	145	65	30	240
ग्रामीण	100	90	50	240

तालिका के अनुसार, शहरी क्षेत्र के 145 (60.42%) विद्यार्थियों की समझ उच्च स्तर की पाई गई, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में यह प्रतिशत 41.67% है। यह अंतर स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि दृश्य एवं क्रियात्मक शिक्षण सामग्री विद्यार्थियों की समझ को बढ़ाने में सहायक होती है।

तालिका 4: स्मृति

क्षेत्र	उच्च	मध्यम	निम्न	कुल
शहरी	135	75	30	240
ग्रामीण	85	95	60	240

शहरी क्षेत्र में 135 (56.25%) विद्यार्थियों की स्मृति उच्च पाई गई, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में यह केवल

35.42% है। ग्रामीण क्षेत्र में निम्न स्मृति स्तर वाले विद्यार्थियों की संख्या अधिक है, जिससे यह संकेत मिलता है कि वहाँ शिक्षण सहायक सामग्री का प्रभाव सीमित है।

समग्र विश्लेषण

उपरोक्त सभी तालिकाओं के आधार पर निम्न प्रमुख निष्कर्ष सामने आते हैं—

1. शहरी विद्यार्थियों में सीखने की रुचि, सक्रियता, समझ एवं स्मृति सभी पहलुओं में उच्च स्तर देखा गया।
2. ग्रामीण विद्यार्थियों में मध्यम एवं निम्न स्तर की प्रवृत्तियाँ अधिक पाई गईं।
3. शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग विद्यार्थियों के अधिगम को अधिक प्रभावी बनाता है।
4. दृश्य एवं क्रियात्मक सामग्री का उपयोग समझ एवं स्मृति को विशेष रूप से बढ़ाता है।
5. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के बीच संसाधनों की असमानता अधिगम स्तर को प्रभावित करती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत भीलवाड़ा जिले के शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर शिक्षण सहायक सामग्री के प्रभाव का विश्लेषण किया गया। अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों एवं उनके विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आते हैं—सबसे पहले, यह स्पष्ट रूप से पाया गया कि शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से विद्यार्थियों की सीखने की शैली में सकारात्मक परिवर्तन आता है। जिन कक्षाओं में चार्ट, मॉडल, चित्र, ऑडियो-वीडियो सामग्री एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण का उपयोग किया गया, वहाँ विद्यार्थियों की समझ अधिक स्पष्ट एवं गहन पाई गई। इससे यह सिद्ध होता है कि बहु-इंद्रिय आधारित शिक्षण अधिगम को अधिक प्रभावी बनाता है। दूसरा महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति विशेषकर रुचि, सक्रियता, समझ एवं स्मृति में उल्लेखनीय सुधार होता है। विद्यार्थी कक्षा में अधिक उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं, प्रश्न पूछते हैं, तथा विषय-वस्तु को लंबे समय तक स्मरण रखते हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि शिक्षण सहायक सामग्री अधिगम को न केवल रोचक बनाती है, बल्कि उसे स्थायी भी बनाती है।

अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के बीच स्पष्ट अंतर भी देखने को मिला। शहरी विद्यालयों के

विद्यार्थियों में सीखने की रुचि, सक्रियता, समझ एवं स्मृति का स्तर ग्रामीण विद्यालयों की अपेक्षा अधिक पाया गया। इसका प्रमुख कारण शहरी विद्यालयों में शिक्षण सहायक सामग्री की अधिक उपलब्धता एवं उनका प्रभावी उपयोग है। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी, तकनीकी साधनों का अभाव एवं शिक्षकों के प्रशिक्षण की सीमाएँ इस अंतर के प्रमुख कारण हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की शैली भिन्न होती है, और शिक्षण सहायक सामग्री इन विविधताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण को अधिक समावेशी बनाती है। दृश्य, श्रव्य एवं क्रियात्मक सभी प्रकार की सामग्री का समुचित उपयोग करने से सभी प्रकार के विद्यार्थियों को लाभ प्राप्त होता है। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि शिक्षकों द्वारा शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग कई बार सीमित होता है, जिसके पीछे प्रशिक्षण की कमी, समय की बाधा एवं संसाधनों की अनुपलब्धता प्रमुख कारण हैं। यदि शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण एवं आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ, तो शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

अंततः, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षण सहायक सामग्री प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने का एक अत्यंत प्रभावी माध्यम है। यह न केवल विद्यार्थियों की सीखने की शैली को विकसित करती है, बल्कि उनकी अधिगम प्रवृत्ति में भी सकारात्मक परिवर्तन लाती है। अतः आवश्यक है कि विद्यालयों में शिक्षण सहायक सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए, शिक्षकों को इसके प्रभावी उपयोग हेतु प्रशिक्षित किया जाए, तथा विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में इन संसाधनों के विकास पर अधिक ध्यान दिया जाए। इस प्रकार, प्रस्तुत अध्ययन यह सिद्ध करता है कि यदि शिक्षण सहायक सामग्री का उचित एवं नियमित उपयोग किया जाए, तो प्राथमिक शिक्षा को अधिक प्रभावी, रोचक एवं छात्र-केंद्रित बनाया जा सकता है, जिससे विद्यार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान संभव है।

*सहायक आचार्य,
**शोधार्थी
शिक्षा विभाग
अपेक्स यूनिवर्सिटी जयपुर राजस्थान

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, जे. सी. (2010). शैक्षिक मनोविज्ञान. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस, पृ. 120।

2. शर्मा, आर. ए. (2012). शिक्षा का मनोविज्ञान. मेरठ: लोयल बुक डिपो, पृ. 85।
3. सिंह, ए. के. (2014). शिक्षा मनोविज्ञान. पटना: भारती भवन, पृ. 140।
4. गुप्ता, एस. पी. (2011). अनुसंधान विधियाँ. नई दिल्ली: शारदा पब्लिकेशन, पृ. 210।
5. कोठारी, सी. आर. (2004). अनुसंधान पद्धति: विधियाँ एवं तकनीकें. नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल, पृ. 110।
6. बेस्ट, जे. डब्ल्यू. एवं काह्न, जे. वी. (2006). शिक्षा में अनुसंधान. नई दिल्ली: प्रेंटिस हॉल, पृ. 180।
7. पियाजे, जीन (1970). संज्ञानात्मक विकास एवं अधिगम. न्यूयॉर्क: हार्पर एंड रो, पृ. 60।
8. वायगोत्स्की, एल. एस. (1978). समाज में मन. कैम्ब्रिज: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 90।
9. स्किनर, बी. एफ. (1958). अधिगम एवं शिक्षण यंत्र. हार्वर्ड एजुकेशनल रिव्यू, पृ. 25।
10. ब्रूनर, जे. एस. (1966). शिक्षण का सिद्धांत. कैम्ब्रिज: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 70।
11. शर्मा, वी. एवं सिंह, आर. (2012). "प्राथमिक शिक्षा में शिक्षण सहायक सामग्री का प्रभाव". *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, 5(2), पृ. 45।
12. गुप्ता, आर. (2015). "शिक्षण सहायक सामग्री एवं शैक्षणिक उपलब्धि". *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन*, 7(1), पृ. 23।
13. कुमार, एस. (2017). "ग्रामीण विद्यालयों में TLM का उपयोग एवं प्रभाव". *शिक्षा शोध पत्रिका*, 10(3), पृ. 60।
14. जोशी, पी. (2018). "रचनात्मकता में शिक्षण सहायक सामग्री की भूमिका". *जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज*, 12(2), पृ. 34।
15. वर्मा, एस. एवं पटेल, एम. (2019). "शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन". *इंटरनेशनल एजुकेशन रिव्यू*, 8(4), पृ. 50।
16. सिंह, डी. (2020). "डिजिटल शिक्षण सहायक सामग्री एवं विद्यार्थी प्रेरणा". *एजुकेशन टुडे*, 9(1), पृ. 15।
17. मिश्रा, ए. (2021). "प्राथमिक विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति पर TLM का प्रभाव". *जर्नल ऑफ मॉडर्न एजुकेशन*, 11(2), पृ. 70।